International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in October 2021, iajesm2014@gmail.com

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता

रेनू गोयल, अनुसन्धान विद्वान् (शिक्षा), टांटिया विश्विद्यालय, श्री गंगानगर (राजस्थान)
डॉ नेकराम, अनुसंधान पर्यवेक्षक (शिक्षा), टांटिया विश्विद्यालय, श्री गंगानगर (राजस्थान)

सार

यह देखा एवं महसूस किया गया है कि जब बच्चों की परीक्षा ली जाती है तो कुछ बालक बेहतर प्रदर्शन कर अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनके अंक औसत से भी कम होते हैं। कम अंक प्राप्त करने वाले शिक्षार्थी का उनके सहपाठी मजाक उड़ाते हैं। बहुप्रायः ये छात्र अपने शिक्षकों एवं अभिभावकों की उपेक्षा का भी शिकार होते हैं। ये एक तरफ इनसे नाराज रहते हैं वहीं दूसरी तरफ हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। विद्यालय और परीक्षा बच्चों के लिए तनाव का कारण बन जाते हैं। ऐसे में बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति या तो अनियमित होती है अथवा वे ड्रॉप आउट हो जाते हैं। ये स्थितियाँ हमारे बच्चों और समाज के लिए कतई उचित नहीं है।

कम अंक यह नहीं बताते बच्चे ने क्या सीखा, कितना अधिगम क्रिया और वे कैसे हासिल कर सकते थे, उनमें क्या सम्भावनाएं निहित थी। ये अंक अभिभावकों एवं बच्चों को सीखने–सिखाने के बारे में उपयोगी फीडबैक नहीं देते हैं। हमें समझना होगा कि अंकों की अनावश्यक प्रतिस्पर्द्धा बालक के भविष्य के लिए सुखद नहीं है। इनके प्रभाव में आकर विद्यार्थी बिना सोचे समझे रटकर या येनकेन प्रकारेण पास हो जाते हैं अथवा अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। इससे विषयवस्तु पर उनकी समझ विकसित नहीं होती है। परीक्षा में सीखने की चाह को मंद कर देती हैं। बच्चे सही, गलत, अच्छा, बुरा मे भेद करने में सक्षम नहीं होते, न ही उनमें मानवीय गुणों का विकास होता है। एक छात्र अच्छे अंक प्राप्त कर एक चिकित्सक या एक इंजीनियर बन सकता है व अच्छा पद भी प्राप्त कर सकता है लेकिन जरूरी नहीं वह अच्छा इन्सान भी बने।

भूमिका

राज्य एवं राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान हमें बालक के स्मृति कोश पर जानकारियां लादने के स्थान पर बच्चों के सीखने की क्षमता को समझना हो। इसी क्रम में केन्द्र सरकार द्वारा आयुवर्ग 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार (आरटीई.–2009) लाया गया। माननीय राष्ट्रपति महोदय ने स्वीकृति जारी होने के पश्चात् 1 अप्रैल 2010 को इसे लागू किया गया। इसके उपरान्त राजस्थान सरकार द्वारा तद्विषयक प्रादेशिक अधिनियम 2011 अधिसूचित किया गया। इसमें यह वर्णित है कि पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन पद्धति ऐसी हो। बच्चे को बालमित्र वातावरण में बाल केन्द्रित शिक्षण द्वारा सीखने की प्रक्रियाएं नियोजित की जाएं। कक्षा कक्षीय प्रक्रियाएं गतिविधि आधारित हों। इस प्रकार का वातावरण बच्चों में सृजनात्मक एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के लिए आवश्यक है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विधा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता हैं राज्य सरकार ने प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को सर्वोत्तम प्राथमिकता देते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने की पहल करते हुए, शैक्षिक सत्र 2015–16 से राजकीय विद्यालयों में एसआईक्यूई. (स्टेटइनिशिएटिव फॉर क्वालिटि एज्युकेशन कार्यक्रम) चलाया हैं इस कार्यक्रम के तहत बच्चों की व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में गुणवत्तापूर्ण बदलाव किया गया है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा :

जीवन में कठोर परिश्रम एवं समर्पित प्रयासों में सफलता अर्जित की जाती हैं सफलता का अंकों से विशेष संबंध नहीं हैं अच्छें अंक लाना सफलता का अभिप्राय नहीं है। बच्चों के

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को आकलन से जोड़ना आवश्यक है। बालक गतिविधियों के माध्यम से स्वयं करके सीखते हैं। विद्यार्थी की सक्रिय सहभागिता से उनमें विषयवस्तु की समझ विकसित होती है।

सतत एवं व्यापक आकलन :

कक्षा–कक्षा एवं कक्षा से बाहर सीखने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा छात्रों की गतिविधियों का सतत एवं नियमित अवलोकन किया जाता है। तद्नुसार बच्चों को मागदर्शन दिया जाता है। यहां पर बालक की दैनिक गतिविधियों का आकलन एवं सावधिक मूल्यांकन शामिल है। व्यापकता का तात्पर्य विषयों में पारंगतता हासिल करने के लिए खेल, कला एवं संगीत को शिक्षण विधि के रूप में शामिल किया जाए। इससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया रूचिपूर्ण होगी। इससे शिक्षार्थी में सामाजिकता, आत्मविश्वास एवं अनुशासन जैसे मानवीय गुणों का भी विकास होता है। यहां आकलन के अवसरों में भी व्यापकता है। बच्चों का आकलन तभी कियाजताा है, जब वे उपलब्ध अथवा उपस्थित हो। आकलन के तरीकों में भी व्यापकता है, क्योंकि मूल्यांकन शिक्षक अधारित तो होता ही है साथ ही बच्चे ही स्वयं के बारे में राय, समूह की राय, अन्य शिक्षकों एवं अभिभावकों की राय भी शामिल की जाती है।[1]

आकलन एवं मूल्यांकन में अंतर :

आकलन कक्षा प्रक्रिया में सीखने–सिखाने के दौरान निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, यह मूल्यांकन प्रक्रिया का ही भाग है। यह बच्चे को नित्यप्रति के सीखने एवं जानने का प्रयास करता एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया का नाम है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा इसका उद्देश्य निदानात्मक होता है इस कारण वह बच्चों को निरन्तर सुधार के अवसर प्रदान करता हुआ उसके ज्ञान के निर्माण को स्थायी करता है। मूल्यांकन एक योगात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान किया जाता है। इसका उद्देश्य इसका मूल्य निर्णयन करना होता है। शैक्षिक संदर्भ में इसका उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थियों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धि के आधार पर मूल्य निर्णयन करना है।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे –

प्रत्येक बच्चे में कुछ विशेषताएं होती हैं उनको पहचान कर पतद्नुरूप शिक्षण योजना बनाकर कक्षा में काम किया जाता है। इनके पीछे मूल भाव यह है कि सभी बच्चे अपनी गति से सीखते हैं उन्हें उनकी गति अधिगम के अवसर व उसके आधार पर आकलन किया जाए। इस दौरान बच्चों द्वारा पृथक तरीके से प्रतिक्रिया की जाती है। शिक्षक द्वारा बच्चों की इन प्रतिक्रियाओं को समझकर तदनुरूप आकलन किया जाता है।

अभ्यास एवं आकलन पत्रक :

कक्षा शिक्षण के दौरान अभ्यास और आकलन पत्रक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी प्रत्यय को सिखाने के पश्चात बच्चे ने उसके प्रति अपनी किसी समझ बनाई है इसलिए शिक्षक को अभ्यास पत्रक तैयार करने चाहिए। इन अभ्यास पत्रकों के उस प्रत्यय के प्रति समझ बनाने में जिस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता अनुभव की जाती है, उसे अभ्यास पत्रक में सम्मिलित किया जाए। इसी प्रकार किसी प्रत्यय अथवा युनिट के पूर्ण होने के पश्चात शिक्षक को एक समग्र आकलन कार्यपत्रक का निर्माण करना चाहिए। इस

[1] उच्च माध्यमिक विद्यालय के अकादमिक–शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी.

कार्यपत्रक के निर्माण में ध्यान रहे कि प्रश्नों के प्रकार में व्यापकता हो, विविधता हो तथाप्रश्न अधिगम उद्देश्यों से अन्तर्ग्रन्थित हो। इसके अतिरिक्त गृहकार्य, श्रुतलेख, सुलेख, प्रोजेक्ट कार्य का प्रस्तुतीकरण द्वारा भी बच्चों को सीखने के अधिक अवसर मिलते हैं। लेकिन इनका लाभ तभी मिलेगा जब शिक्षक स्वयं सतर्क एवं सक्रिय रहकर योजनाबद्ध प्रयास करेंगे।[2]

सूचक संग्रह एवं रिपोर्ट :

कक्षा शिक्षण के दौरान यह भी जरूरी है कि शिक्षक अपनी डायरी में बच्चे के कार्य एवं प्रतिक्रियाओं से संतुलित निष्कर्ष, सकारात्मक पक्ष, खूबियों एवं कमजोर पक्षों को लिखें। यह जानकारी दैनिक अवलोकन एवं चैकलिस्ट में सूचना दर्ज करने से उपयोगी साबित होगी। बच्चों द्वारा किए गए कार्य में नमूने साक्ष्य के रूप में पोर्टफोलियों में संग्रहित किए जाएं।

शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता

किसी भी समाज में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तीन मुख्य घटक हैं – छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक। माता–पिता एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटक है जो न केवल नामांकन एवं ठहराव के लक्ष्य की प्राप्ति में उपयोगी भूमिका का निर्वहन कर सकता है, वरन शिक्षा की गुणात्मकता में भी योगदान दे सकता है। विद्यालय के उत्तरदायित्व में सामाजिक उत्थान को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। समाज विद्यालय की स्थापना करता है। विद्यालय समाज का प्राण और संस्कृति के प्रमुख केन्द्र है। विद्यालय, समाज का एक अविभाज्य अंग है। स्कुल की वास्तविक सुन्दरता सबके लिए शिक्षा से है। सर्व शिक्षा विभिन्न आयामों की एक रामबाण औषधि है, इसमें सबकी भागीदारी और सबका परस्पर सहयोग रहा व कार्य में दक्षता रही तो एक दिन फिर हमारा भारत जगद्गुरु कहलाएगा। कोई भी कार्य लोगों की भागीदारी के बगैर सफल नहीं हो सकता। विद्यालय के सामाजिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आवश्यक है, न कि उपेक्षावृत्ति। शिक्षा मानव जाति की साझा संपत्ति है।

हमारा अतीत अत्यन्त गौरवमय रहा है। प्राचीनकाल से ही भारत अपनी विद्वता, कला, संस्कृति एवं सभ्यता के क्षेत्र में अद्वितीय रहा है। राष्ट्र 'सबके लिए शिक्षा'' की दशा की ओर प्रयास कर रहा है। सर्व शिक्षा और विशेष कर अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का सपना तब तक साकार नहीं होगा जब तक अभिभावकों में शिक्षा के साथ जुड़ाव की भावना न जागे। इस संकल्पना की पूर्ति के लिए आवश्यक है माता–पिता की सहभागिता। शिक्षा के प्रति जागरूकता के पीछे देश की यह 'राष्ट्रीय इच्छा' काम कर रही है कि हमें विश्व में किसी से पीछे नहीं रहना है। विद्यालय व समाज का सम्बन्ध पारस्परिक हित के लिए है। शिक्षा व सोसायटी में आत्मा व शरीर जैसा सम्बन्ध है। इनका आपस में अटूट रिश्ता है। शिक्षा, मानव विकास की प्रथम सीढ़ी है जिसे पार किए बिना अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हो सकती। देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण, उत्तम एवं सरलतम साधन है 'शिक्षा'।

आज की एज्युकेशन कल निर्माण होने वाले समाज का बीज होता है। कल के समाज की पेशगी आज की शिक्षा द्वारा प्राप्त होती है। विद्यालय शिक्षा के केन्द्र हैं। अभिभावक, शिक्षक और परिवेश तीनों ही के सुसंपर्क से बनता है बालक का जीवन। विद्यालय और समाज को परस्पर जोड़ने के लिए विद्यालय में अध्यापक–अभिभावक परिषद् का गठन किया जाता है। वास्तव में स्थानीय समाज की सजग भागीदारी ही विद्यालयों को

[2] रिसर्च इन एज्युकेशन. नई दिल्ली: प्रेन्टिस हाल इन इण्डिया प्रा. लि.

गतिशील बनाकर शिक्षण व्यवस्था को प्रभावी बनाने में सहयोग देती है। माता–पिता की भागीदारी से ही विद्यालय की स्थानीय समस्याओं का निराकरण हो सकेगा तथा छात्रों में व्याप्त अनुशासनहीनता की समस्या समाप्त होगी।

भारत में अध्यापक–अभिभावक संघ की योजना वर्षों से चल रही है। अभिभावकों का सहयोग इस बात के लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में नामांकन वृद्धि हो, छात्र–छात्राओं का ठहराव सुनिश्चित हो, अपव्यय एवं अवरोधन की स्थिति में सुधार हो। शिक्षक–अभिभावक परिषद् ही वह मंच है जिसके माध्यम से अभिभावकों को उनके दायित्वों का बोध कराया जा सकता है।

आज हम एक प्रजातान्त्रिक समाज व्यवस्था में रह रहे हैं। जो व्यक्ति की गरिमा और समानता पर आधारित है। शिक्षित व्यक्ति ही दुनिया में वांछित परिवर्तन ला सकते हैं, यह क्षमता केवल उन्हीं में है, अतः हमें शिक्षा की शक्ति पर विश्वास करके चलना होगा। शिक्षा का सच हमें सभ्य जीवन जीने की कला की ओर ले जाता है और यह कला ही जीवन की कला है। इसमें सबका योगदान होना चाहिए। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत एवं सभ्य बनाने का हेतु है। देश का सर्वांगीण विकास इसी से ही सम्भव है। अतः विश्व में अग्रणी बनने के लिए शिक्षा में जन समूह की सहभागिता आवश्यक है।

चाहत होती है कि बालक की उपलब्धि सर्वोपरि रहे। यह सोच तो ठीक है लेकिन इसे अमली जामा पहनाने की बात पर भी गौर करना आवश्यक है। इस उपलब्धि के तीन मुख्य संबल हैं : अध्यापक, स्वयं बालक एवं अभिभावक। तीनों के सम्मिलित प्रयास ही कारगर सिद्ध हो सकते हैं शिक्षक का सामाजिक पुनरुत्थान एवं सांस्कृतिक उत्थान का दायित्व भी निभाना होगा। बाल कुछ अभिवृत्तियां और मूल्य लेकर विद्यालय आते हैं। आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। आज सद्संस्कृत व्यक्ति ही शिक्षक जैसे महत्वपूर्ण पद के कर्तव्यों को निभा सकता हैं शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही समाज एवं राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

शिक्षक राष्ट्रनिर्माता है तो विद्यार्थी राष्ट्र का भावी कर्णधार है। शर्त यही है कि शिक्षक में कर्त्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी हो और अभिभावक भी जागरूक हों व विद्यालय के लिए समय देने को तत्पर हो। इसमें जितना शिक्षक का महत्व है उतना ही अभिभावक का भी है। शिक्षक अपनी सम्पूर्ण योग्यता एवं क्षमता से शिक्षण कार्य करता है किन्तु अभिभावकों को अपने–अपने दायित्व बखूबी निभाने चाहिए। आज के छात्र कल के नागरिक होंगे। एक अच्छे नागरिक को मानव सम्बन्धों का विशेषज्ञ होना चाहिए।

विद्यालय के लोकाचार की गुणवत्ता को सुधारने के संसाधन जुटाए जाएं। इस बात की कोशिश करनी होगी कि बच्चों के लिए सीखने के लिए अधिक संसाधन तैयार किए जाएं, खासकर स्कूल और शिक्षक के लिए संदर्भ पुस्तकालय हेतु स्थानीय भाषाओं में किताबें और संदर्भ सामग्रियां उपलब्ध हो और बच्चों की अतः क्रियात्मक तकनीक तक पहुंच हो।

सन्दर्भ

1. बेस्ट, जॉन डब्लू. (1954) रिसर्च इन एज्युकेशन. नई दिल्लीः प्रेन्टिस हाल इन इण्डिया प्रा. लि.
2. बी, राममोहन. बाबू. (2015). विद्यालयों के प्रकार और अध्यापको के लिंग के संबंध में विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन. पर्सपेक्चर इन एज्युकेशन वोल्यूम 12(3) , पृ. 159–163.
3. बडगुर्जर प्रेमकंवर (2012) : राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल

टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू (राज.) प्रकाशित शोध प्रबंध, छवि नेशनल जर्नल ऑफ हायर एज्युकेशन, वर्ष–दो, निर्गमन–दो, जनवरी–मार्च 214 पेज 19–21.
4. बोहरा, लक्ष्मीधर (2006) प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में विचार करने की योग्यता (विचारशक्ति) को बढ़ाना: पर्यावरणीय अध्ययन एक मार्ग के रूप में. प्राथमिक शिक्षक वोल्यूम ग ग टए (3) 25–3.
5. बी, एकामर्बज. (2013). स्कूल के वातावरण को प्रभावित करने वाले प्रयोगों का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. रायल विश्वविद्यालय, भूटान.
6. दास, आर. (2017). माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों के निर्देशात्मक प्रंबधन व्यवहार और विद्यालयों के कार्य और संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध.कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र.
7. दीवान, रश्मि. (2016) विद्यालय के प्रधानाध्यापकों में नायकत्व व्यवहार और मूल्य निर्माण (आदर्श) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली.
8. देसाई, आर. (2016). विद्यार्थियों के विकास के संबंध में कक्षा के वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर.
9. दयाल, रामेश्वर. (2017). एक सामाजिक स्तरीय अध्ययन का संबंध अकादमिक के सामाजिक अवधारणा और एयरमेन के विशेष सन्दर्भ में, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY